श्रीमद् भगवद् गोपीनाथस्य
अष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्रम्



जगद्गुरु भगवान् गोपीनाथ जी

श्रीमद् भगवद् गोपीनाथस्य
अष्टोत्तर-शतनाम स्तोत्रम्



भगवन्तं गोपीनाथं शरणं गच्छामि

त्यौहार:-

वार्षिक महायज्ञ ....ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया
महाजयन्ती..................आषाढ शुक्ल द्वादशी

सामूहिक आरती.............. नित्य संध्या काल

स्थान :- भगवान श्रीगोपीनाथ जी आश्रम,
खरयार, हब्बाकदल, श्रीनगर, काश्मीर ।

बोढी, उदयवाला, जम्मू ।

अस्य श्री भगवद् गोपीनाथाष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्री गोपीनाथ ऋषिः स्वच्छन्दः छन्दः श्री गुरुः गोपीनाथो देवता आत्मनो वाङ्-मनः-कायोपार्जित-पाप-निवारणार्थ श्रीगोपीनाथ-प्रीत्यर्थे पाठे होमे वा विनियोगः

उों जितेन्द्रियाय अंगुष्ठाभ्यां नमः, इष्टदेवाय तर्जनीभ्यां नमः, परारूपाय मध्यमाभ्यां नमः, पापनाशकाय अनामिकाभ्यां नमः, प्रकाशरूपाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः, मृत्युञ्जयाय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः ।

उों जितेन्द्रियाय हृदयाय नमः, इष्टदेवाय शिरसे स्वाहा, परारूपाय शिखायै वौषट्, पाप-नाशकाय कवचाय हुम्, प्रकाश-रूपाय नेत्र-त्रयाय वौषट्, मृत्युञ्जयाय अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलं अचलं सर्वधी-साक्षिभूतम्
भावातीतं त्रिगुण-रहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥ १ ॥

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्द-विग्रहम् ।
यस्य सान्निध्य-मात्रेण चिदानन्दायते परम् ॥ २ ॥

श्रीगुरुं द्विभुजं शान्तं वरांबुज-कराभयम्।
पूर्णेन्दु-वदनांभोजं हसंतं शक्ति-संयुतम् ॥ ३ ॥

श्वेत-वस्त्र-परीधानं नाना-लंकार-भूषितम् ।
आनन्द-मुदितं देवं ध्यायेत्पंकज विष्ठरम् ॥ ४ ॥

(ध्यान के बाद अष्ठोत्तर शत नाम का पाठ)

ध्यानं कृत्वा भगवतो गोपीनाथस्य सद्गुरोः
जपेत् इमां जपमालां सर्व-पाप-भयापहाम् ॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
अकाराय नमो नमः ॥ १ ॥
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
अतिदीप्ताय नमो नमः ॥ २ ॥
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
अचिन्त्याय नमो नमः ॥ ३ ॥

ऊँ नमो भगवते गोपीनाथाय
अतुल्याय नमो नमः ॥ ४ ॥
ऊँ नमो भगवते गोपीनाथाय
अमिताभाय नमो नमः ॥ ५ ॥
ऊँ नमो भगवते गोपीनाथाय
अघोराय नमो नमः ॥ ६ ॥
ऊँ नमो भगवते गोपीनाथाय
अनिन्दिताय नमो नमः ॥ ७ ॥
ऊँ नमो भगवते गोपीनाथाय
अव्यक्ताय नमो नमः ॥ ८ ॥
ऊँ नमो भगवते गोपीनाथाय
अवधूताय नमो नमः ॥ ९ ॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
आधिहराय नमो नमः ॥१०॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
आश्रमस्थाय नमो नमः ॥११॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
आत्मतत्वाय नमो नमः ॥१२॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
इष्टदेवाय नमो नमः ॥१३॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
कल्पवृक्षाय नमो नमः ॥१४॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
कालपूजिताय नमो नमः ॥१५॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
खेचराय नमो नमः ॥ १६ ।
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
गम्भीराय नमो नमः ॥१७॥
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
ओंरूपाय नमो नमः ॥१८॥
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
गुणातीताय नमो नमः ॥१९॥
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
गोचराय नमो नमः ॥२०॥
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
घोरातिघोराय नमो नमः ॥२१॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
चन्द्रवक्त्राय नमो नमः ॥ २२॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
चिदानन्दाय नमो नमः ॥२३॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
जितेन्द्रियाय नमो नमः ॥२४॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
त्यागरूपाय नमो नमः ॥२५॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
तपोमयाय नमो नमः ॥२६॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
तन्त्रसाराय नमो नमः ॥२७॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
तत्वचिन्तकाय नमो नमः ॥२८॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
दानवीराय नमो नमः ॥२९॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
दु:खनाशकाय नमो नमः ॥३०॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
देवरूपाय नमो नमः ॥३१॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
देशरक्षकाय नमो नमः ॥३२॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
दैत्यनाशकाय नमो नमः ॥३३॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
ध्यानशीलाय नमो नमः ॥३४॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
ध्रुवरूपाय नमो नमः ॥३५॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
न्यग्रोधरूपाय नमो नमः ॥३६॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
नर्तकाय नमो नमः ॥३७॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
निरामयाय नमो नमः ॥३८॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
निष्कलाय नमो नमः ॥३९॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
निर्मलाय नमो नमः ॥४०॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
नियामकाय नमो नमः ॥४१॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
निरुपमाय नमो नमः ॥४२॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
नृत्यप्रियाय नमो नमः ॥४३॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
परिपूर्णाय नमो नमः ॥४४॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
प्रकाशरूपाय नमो नमः ॥४५॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
परारूपाय नमो नमः ॥४६॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
पापनाशकाय नमो नमः ॥४७॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
बलवीराय नमो नमः ॥४८॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
बहुरूपाय नमो नमः ॥४९॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भालचन्द्राय नमो नमः ॥५०॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
बीजवाहनाय नमो नमः ॥५१॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भक्तपूजिताय नमो नमः ॥५२॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भक्तवंन्दिताय नमो नमः ॥५३॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भक्तवरदाय नमो नमः ॥५४॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भक्तिलभ्याय नमो नमः ॥५५॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भक्तवत्सलाय नमो नमः ॥५६॥
ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भयनाशकाय नमो नमः ॥५७॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भावमयाय नमो नमः ॥५८॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
भोगमोक्षदाय नमो नमः ॥५९॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
महाभैरवाय नमो नमः ॥६०॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
महापण्डिताय नमो नमः ॥६१॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
मंत्रसाधकाय नमो नमः ॥६२॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय
महाशीतलाय नमो नमः ॥६३॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महासाधकाय नमो नमः ॥६४॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महानन्दाय नमो नमः ॥६५॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
मंत्रकाराय नमो नमः ॥६६॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महाबीजाय नमो नमः ॥६७॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महाबलाय नमो नमः ॥६८॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महाशयाय नमो नमः ॥६९॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महारूपाय नमो नमः ॥७०॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महानादाय नमो नमः ॥७१॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
महेश्वराय नमो नमः ॥७२॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
मानदाय नमो नमः ॥७३॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
मुक्तिदाय नमो नमः ॥७४॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
मृत्युञ्जयाय नमो नमः ॥७५॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
यागप्रियाय नमो नमः ॥७६॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
योगेश्वराय नमो नमः ॥७७॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
रक्तनेत्राय नमो नमः ॥७८॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
रुद्ररूपाय नमो नमः ॥७९॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
रोगनाशकाय नमो नमः ॥८०॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
लोकपालाय नमो नमः ॥८१॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
व्याधिनाशकाय नमो नमः ॥८२॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
व्यक्तरूपाय नमो नमः ॥८३।

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
वडवानलाय नमो नमः ॥८४॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
विश्वरूपाय नमो नमः ॥८५॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
श्रीवर्द्धकाय नमो नमः ॥८६॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
शरण्याय नमो नमः ॥८७॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
शक्तिरूपाय नमो नमः ॥८८॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
शङ्कराय नमो नमः ॥८९॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
शान्तरूपाय नमो नमः ॥९०॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
शाश्वताय नमो नमः ॥९१॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
शुभंकराय नमो नमः ॥९२॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
शुभफलदाय नमो नमः ॥९३॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
स्नेहसिक्ताय नमो नमः ॥९४॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
स्वयम्भूताय नमो नमः ॥९५॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सर्वज्ञाय नमो नमः ॥९६॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सर्वतोमुखाय नमो नमः ॥९७॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सकलाय नमो नमः ॥९८॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सहस्राक्षाय नमो नमः ॥९९॥

उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सनातनाय नमो नमः ॥१००॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सदाशिवाय नमो नमः ॥१०१॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सिद्धार्थाय नमो नमः ॥१०२॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सुमुखाय नमो नमः ॥१०३॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सूक्ष्मरूपाय नमो नमः ॥१०४॥
उों नमो भगवते गोपीनाथाय
सौख्यदाय नमो नमः ॥१०५॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
संवित् रूपाय नमो नमः॥१०६॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
हितकराय नमो नमः॥१०७॥

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
ज्ञानदाय नमो नमः॥१०८॥

श्री भगवान जी के नामस्तोत्र के विषय में

(लेखक- श्री त्रिलोकीनाथ भट्ट)

"उों" (जिसे कश्मीर की शारदा लिपि में यों लिखा जाता है-ॾँ)तीन वर्णों अ, उ, म् के संयोग से बना है। इस प्रकार "उों" परमेश्वर के तीनों रूपों, अर्थात् सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, पालक विष्णु और संहार-कारक रुद्र का वाचक है। भगवान् गोपीनाथ जी महाराज "उों" के उपासक भी रहे हैं। वैसे कश्मीर में "उों" (प्रणव) के उपासक बहुत कम हैं। 'भगवान' उस महात्मा को कहते हैं, जिसके पास शास्त्रों में वर्णित छहों प्रकार के ऐश्वर्य हों। इस प्रकार "उों नमो भगवते गोपीनाथाय"

का अर्थ है- छः प्रकार के ऐश्वर्य से संपन्न श्री गोपीनाथ जी महाराज को नमस्कार हो । "नमो नमः" का अर्थ भी है- नमस्कार हो, नमस्कार हो। इस प्रकार इस स्तोत्र का रचयिता भक्त अपने गुरु भगवान् जी को बार बार नमस्कार करता है । भारतीय भक्त अपने गुरुदेव को परमेश्वर-स्वरूप मानकर हर पदार्थ में उसी की झलक पाता है। उसे तरह तरह के नामों से पुकारता है । तरह तरह के विशेषणों से उसे विशेषित करता है । प्रस्तुत स्तोत्र के रचयिता भक्त ने भगवान् जी को बार बार नमस्कार करते हुए उन्हें तरह तरह के नामों, विशेषणों से पुकारा है, अगली पंक्तियों में इन १०८ नामों या विशेषणों का संक्षिप्त अर्थ देने की चेष्टा की जाती है ।

१. **अकार**- सृष्टि की आदि में रहने वाले और सृष्टि के पालक ।

२. **अतिदीप्त**- योग साधना के कारण दीप्तिमान।

३. **अचिन्त्य**- तरह तरह के गुणों एवं विशेषणों से विशिष्ट होने के कारण जिन के बारे में हम सोच न सकें।

४. **अतुल्य**- अपनी महत्ता के कारण जिनके समान और कोई न हो ।

५. **अमिताभ**- योग-साधना के कारण जो सैंकडों सूर्यों के समान उज्जवल हैं और जिनकी आभा की कोई सीमा नहीं ।

६. **अघोर**- अपनी शक्तियों के कारण जो रुद्र के समान हों ।

७. **अनिन्दित**- कोई जिनकी निन्दा न कर सके।

८. **अव्यत्क** - जिनका असली रूप प्रकट नहीं

९. **अवधूत**- जो बाहर से कुछ (साधारण मनुष्य) दीखते हैं; अन्दर से और ही कुछ (जीवन्मुक्त) हैं।

१०. **आधिहर**- जो मानसिक कष्ट दूर करते हैं।

११. **आश्रमस्थ**- जो स्थूल शरीर त्यागने पर भी अपने शिष्यों तथा भक्तों के कल्याण के लिए उन के द्वारा स्थापित आश्रमों में अपने सूक्ष्म शरीर में विद्यमान् हैं।

१२. **आत्म-तत्व**- ज्ञानी होने के कारण अपनी आत्मा को समझने वाले।

१३. **इष्ट देव**- जो अपने भक्तों के इष्टदेव हैं।

१४. **कल्पवृक्ष**- हर प्रकार की इच्छाओं, आकांक्षाओं की पूर्ति करने वाले। कहा जाता है कि कल्पवृक्ष स्वर्ग में होता है।

उसके नीचे बैठकर मनुष्य जो मांगे वही मिलता है ।

१५. **कालपूजित**- सभी को मारने वाले महाकाल जिनकी सेवा में अंजलि बांधे खडा है ।

१६. **खेचर**- अपने आसन पर बैठे बैठे ही जो योग-साधना से नभोमंडल में विचरण करते हैं ।

१७. **गंभीर**- गंभीर प्रकृति वाले ।

१८. **ऒं रूप**- ऒं के उपासक होने के कारण जो स्वंय ऒं रूप बन गए हैं ।

१९. **गुणातीत**- यह सृष्टि सत्वगुण-रजोगुण-तमोगुण-मय है, पर भगवान् जी तीनों गुणों से परे हैं ।

२०. **गोचर**- इन्द्रियों के विषय; अर्थात् भगवान्

जी ही इन्द्रियों से जानने योग्य है ।

२१. घोरातिघोर- भगवान् शिव शक्ति-रूप एवं शक्ति से परे होने के कारण घोरातिघोर नाम से प्रसिद्ध हैं, भगवान् जी शिव स्वरूप ही हैं ।

२२. चन्द्रवक्त्र- भगवान जी का मुख चन्द्रमा की तरह सुन्दर होने से उन्हें 'चन्द्रवक्त्र' कहा गया है ।

२३. चिदानन्द- चैतन्य स्वरूप और आनन्द स्वरूप । सारे जीव चैतन्य-स्वरूप तो हैं पर महात्मा लोग ही आनन्द-स्वरूप होते हैं ।

२४. जितेन्द्रिय- जिन्होंने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।

२५. त्यागरूप- माया से परे होने के कारण जिन्होंने सांसारिक विषयों का त्याग किया

है ।

२६. **तपोमय**- जो निरंतर तपस्या में लीन रहते हैं ।

२७. **तन्त्रसार**- तंत्रशास्त्र परम-तत्व (ब्रह्म) की ओर ले जाते है, भगवान् जी परम तत्व (ब्रह्म-रूप) हैं ।

२८. **तत्वचिन्तक**- निरंतर परम्-तत्व (ब्रह्म या परमशिव) का चिन्तन करने वाले ।

२९. **दानवीर**- अपने भक्तों को निरंतर कुछ न कुछ देने वाले। इस के अतिरिक्त श्रीभगवान् जी प्रत्येक साधु-सन्यासी को एक एक रुपया दिया करते थे ।

३०. **दुःख-नाशक**- दु:खों का नाश करने वाले

३१. **देव-रूप**- देवता-स्वरूप

३२. देश रक्षक- देश की रक्षा करने वाले ।
स्वंय श्रीभगवान् जी के कथनानुसार 1947-48 के युद्ध में एवं एक सेनाधिकारी के कथनानुसार, 1962 के युद्ध में शारीरिक रूप में श्रीनगर में होते हुए भी, श्रीभगवान् जी लड़ाई के मोर्चों पर हमारी सेनाओं का दिग्-दर्शन करते रहे । माना जाता है कि 1965 के युद्ध में भी उन्होंने हमारी सेनाओं की आध्यात्मिक शक्ति से सहायता की ।

३३. दैत्य नाशक- असुरों का नाश करने वाले।

३४. ध्यानशील- निरंतर ध्यान में रहने वाले ।

३५. ध्रुवरूप- जो ध्रुव तारे की तरह अपनी आध्यात्मिक स्थिति में अटल है ।

३६. न्यग्रोधरूप- जो न्यग्रोध नामक महान् वृक्ष की तरह अनेक प्राणियों को अपने पास

शरण देते हैं ।

३७. **नर्तक**- जो अपने अन्दर के आनन्द से झूमते रहते हैं ।

३८. **निरामय**- संसार-बन्धन एक प्रकार का रोग है। भगवान् जी इस रोग से मुक्त हैं ।

३९. **निष्कल**- परिपूर्ण । सांसारिक जीव अधूरे हैं, भगवान् जी परंब्रह्म स्वरूप होने से परिपूर्ण हैं ।

४०. **निर्मल**- आणव मायीय, कार्म-इन तीन प्रकार के मलों से मुक्त ।

४१. **नियामक**- भगवत्-स्वरूप होने से सृष्टि का नियमन करने वाले ।

४२. **निरुपम**- जिनकी समता कोई न कर सके।

४३. **नृत्यप्रिय**- अपने आनन्द में मस्त रहने से जो नृत्य का सुख लेते हैं ।

४४. **परिपूर्ण**- जिन में कोई भी कमी नहीं ।

४५. **प्रकाशरूप**- अपने अन्दर के प्रकाश से जो ज्ञानी है ।

४६. **परारूप**- मूल चक्र से जब शब्द उठने लगता है तो उसे "परा वाक्" कहते हैं। इसका अनुभव केवल योगी कर सकते है, योगिराज भगवान जी को "परावाक्" का अनुभव है ।

४७. **पाप-नाशक**- पापों का नाश करने वाले।

४८. **बलवीर**- बलशाली; तपोबल, मनोबल, बुद्धिबल से संपन्न

४९. **बहुरूप**- भक्त जिन्हें तरह तरह से पहचानते हैं ।

५०. **भालचन्द्र**- गणपति-स्वरूप, विघ्नहर ।

५१. **बीजवाहन**- बीजाक्षरों पर पूर्ण प्रभुता

रखने वाले ।

५२. **भक्त-पूजित**- भक्त जिनकी पूजा करते हैं।

५३. **भक्त-वंदित**- भक्त जिनकी वंदना करते हैं।

५४. **भक्त-वरद**- जो भक्तों को वरदान देते हैं।

५५. **भक्ति-लभ्य**- जो भक्ति के द्वारा सुलभ हैं।

५६. **भक्तवत्सल**- जो अपने भक्तों से प्यार करते हैं ।

५७. **भयनाशक**- जो सभी प्रकार के सांसारिक भय का नाश करते हैं ।

५८. **भावमय**- जो भक्तों के प्रति सद्भाव-पूर्ण हैं।

५९. **भोगमोक्षद**- जो भक्तों को सांसारिक सुख और अन्त में मुक्ति देते हैं ।

६०. **महाभैरव**- जो परम शिव से अभिन्न है ।

६१. **महापण्डित**– जो बहुत बडे पंडित, अर्थात् सभी आध्यात्मिक रहस्यों को जानने वाले हैं ।

६२. **मंत्रसाधक**– जो मंत्रसाधना में लीन हैं ।

६३. **महाशीतल**– जो परम् दयालु है ।

६४. **महासाधक**– सर्वोत्कृष्ट साधक

६५. **महानन्द**– ब्रह्म में लीन रहने से जो पूर्ण आनन्द का अनुभव करते हैं ।

६६. **मंत्रकार**– जो भक्तों के लिए मंत्रों का सृजन करते हैं ।

६७. **महाबीज**– ब्रह्मस्वरूप होने के कारण संसार के मूलभूत तत्व ।

६८. **महाबल**– सब से बढ़ चढ़ कर बलशाली।

६९. **महाशय**– जिनके हृदय एवं वासना महान्

हैं ।

७०. **महारूप**- हर प्रकार से जिनमें बडप्पन है।

७१. **महानाद**- जिनकी आवाज महान् है; अर्थात् आध्यात्मिक शक्ति के कारण दूर दूर भक्तों को सुनाई दे सके ।

७२. **महेश्वर**- शिव-स्वरूप, महान् ईश्वर ।

७३. **मानद**- भक्तों को सम्मान देने वाले ।

७४. **मुक्तिद**- मुक्ति देने वाले ।

७५. **मृत्युञ्जय**- जिन्होंने शिव की तरह मृत्यु को जीता है

७६. **यागप्रिय**- जिन्हें यज्ञ करना बहुत पसन्द है । वे अपने पार्थिव जीवन के अन्तिम बहुत वर्ष प्रतिदिन यज्ञ करते रहे ।

७७. **योगेश्वर**- वे श्रेष्ठ योगी हैं ।

७८. **रक्तनेत्र**- लाल आंखो वाले, साधना करते रहने से और निरंतर हवन के धुएं के सेवन से भगवान जी की आंखे लाल रहती थीं ।

७९. **रुद्ररूप**- रुद्र स्वरूप ।

८०. **रोगनाशक**- भक्तों के रोग दूर करने वाले । श्री भगवान जी के दृष्टिमात्र या उन के दिए भस्म इत्यादि से असाध्य रोग दूर होते थे ।

८१. **लोकपाल**- लोगों की रक्षा करने वाले ।

८२. **व्याधिनाशक**- शारीरिक कष्ट दूर करने वाले।

८३. **व्यक्तरुप**- भक्त जिनके रूप को अच्छी तरह समझते हैं ।

८४. **वडवानल**- समुद्र के पानी को सुखाने वाली

आग । संसार को सागर माना गया है जिसमें माया का पानी है । इसे सुखाने की ज़रूरत है। भगवान जी की दया माया से छुटकारा देती है; अतः उन्हें लाक्षणिक रूप से वड़वानल कहा गया है ।

८५. **विश्वरूप**- भगवान कृष्ण की तरह भगवान जी में सारा विश्व समाया है ।

८६. **श्रीवर्द्धक**- वे अपने भक्त की धन दौलत और शोभा में वृद्धि करते हैं ।

८७. **शरण्य**- शरण में आए भक्तों की रक्षा करने वाले ।

८८. **शक्तिरूप**- परमेश्वर की शक्तियों से युक्त।

८९. **शङ्कर**- कल्याणकारी ।

९०. **शान्तरूप**- शान्त स्वभाव वाले ।

९१. **शाश्वत**- नित्य रहने वाले ।

९२. **शुभंकर**- जो भक्तों का शुभ करते हैं ।

९३. **शुभफलद**- शुभ फल देने वाले ।

९४. **स्नेहसिक्त**- जिनमें भक्तों के लिए अपार स्नेह हो ।

९५. **स्वयंभूत**- ब्रह्म से अभिन्न होने के कारण जो हमेशा थे; जिन्हें और किसी ने पैदा न किया।

९६. **सर्वज्ञ**- जो सांसारिक जीवों की तरह अल्पज्ञ न होकर परमात्मा की तरह सब जानते हैं ।

९७. **सर्वतोमुख**- जिन का मुख सब तरफ हो; कि ी भी दिशा में घटित घटना को जानने वाले ।

९८. **सकल**- सर्व-स्वरूप। उनके अतिरिक्त और कुछ नहीं है, क्योंकि वे ही स्वंय ब्रह्म हैं ।

९९. **सहस्राक्ष**- इन्द्र की तरह हज़ार आंखों वाले

और परमैश्वर्यशाली। सब कुछ देखने वाले।

१००. **सनातन**- हमेशा रहने वाले।

१०१. **सदाशिव**- शिव-स्वरूप। सदा कल्याण करने वाले

१०२. **सिद्धार्थ**- जिनके सब काम हो गए हैं। जिन्हें और कुछ करना बाकी नहीं।

१०३. **सुमुख**- सुन्दर मुख वाले।

१०४. **सूक्ष्मरूप**- ब्रह्म की तरह सूक्ष्म से सूक्ष्म।

१०५. **सौख्यद**- भक्तों को सुख देने वाले।

१०६. **संवित् रूप**- परमेश्वरोन्मुख ज्ञान से परिपूर्ण; ज्ञान-स्वरूप।

१०७. **हितकर**- सारे संसार का हित करने वाले।

१०८. **ज्ञानद**- भक्तों में परमार्थ का ज्ञान पैदा करने वाले।

यह रहा भगवान जी के १०८ नामों या विशेषणों का संक्षिप्त अर्थ । ये सारे शब्द अकारान्त हैं । संस्कृत व्याकरण के नियमानुसार इन शब्दों को प्रथमा एक वचन में लिखना चाहिए था, पर यह प्रयास उन भक्तों के लिए है जिन्हें संस्कृत का ज्ञान नहीं । संस्कृत के पंडित स्वयं इनके प्रथमान्त रूप लगा सकते हैं ।

प्रकाशक :

भगवान श्रीगोपीनाथ जी ट्रस्ट (रजि.)

खरयार, हब्बाकदल, श्रीनगर, काश्मीर ।

कैम्पः

उदयवाला, बोढी, जम्मू (तवी)

मुद्रक : [illegible]ी प्रेस, दिल्ली

मूल्य - 5/-